विश्व के मिशनों की चुनौती का सामना

कलीसिया के काम का केन्द्र बिन्दु मिशन कार्य की चुनौती है। जैसे किसी ने कहा है, ''परमेश्वर के पास केवल एक ही पुत्र था, और वह मिशनरी था।'' यीशु ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने'' स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया (लूका 19:10)। आज की कलीसिया मसीह की देह है; इसकी प्राथमिकताएं इसके प्रभु द्वारा ठहराई गई हैं। यदि ''खोए हुओं को ढूंढ़ना और उनका उद्धार करना'' उसका मिशन था, तो आज उसके लोगों का मिशन भी वही होना चाहिए। कलीसिया के जो अगुवे प्रभु और कलीसिया के मिशन को करना चाहते हैं उनके लिए विश्व के मिशनों की चनौती पर ध्यान देना आवश्यक है।

मिशनों से जुड़ी दो समस्याएं हैं जिनसे स्थानीय कलीसिया का नेतृत्व प्रभावित होता है: (1) कोई काम करना और (2) उसे सही ढंग से करना!

मिशनों में कलीसिया को लगाना

कलीसिया के अगुओं को मिशन कार्य के महत्व पर ज़ोर देना आवश्यक है।[1] कलीसिया का काम हर जाति के लोगों को चेले बनाना है (मत्ती 28:18-20)। इस सम्बन्ध में ऐल्डरों के सामने आने वाली समस्या झगड़ा या असहमति है, और आवश्यक नहीं कि यह हर जगह ही हो, ज़्योंकि इसका कारण सुस्ती भी हो सकता है। प्रश्न यह है: ''कलीसिया के अगुवे सदस्यों को सारे संसार में सुसमाचार ले जाने के लिए और अधिक सक्रिय कैसे बना सकते हैं?'' हम पांच सुझावों का अध्ययन करेंगे।

सदस्यों को मिशन की भावना वाला नेतृत्व दें

यदि कोई मण्डली मिशन कार्य को समर्पित होना चाहती है, तो उसके लिए सबसे पहले मिशन की भावना वाली अगुआई की आवश्यकता है। यदि अगुवे स्वयं ही सुसमाचार के प्रचार में दिलचस्पी नहीं लेते हैं तो वे दूसरे मसीही लोगों को उसके लिए उत्साहित नहीं कर सकते हैं। यीशु ने पतरस से कहा था, ''और जब तू फिरे [या जब तेरा मन बदले], तो अपने भाइयों को स्थिर करना'' (लूका 22:32)। अगुओं के लिए शायद यह बात सबसे आवश्यक है कि दूसरों को मिशन कार्य में सज़्मिलित करने से पहले वे स्वयं इसमें परिवर्तित हों।

ज़्या कलीसिया के सब अगुवे मिशन की भावना वाले नहीं होते? आवश्यक नहीं। कुछ

प्रचारकों को केवल ''अपना'' चर्च बनाने और मिशनरियों को शक की नज़र से देखना ही ठीक लगता है। कुछ ऐल्डरों की मिशन कार्य में दिलचस्पी बहुत कम होती है। यदि आपको संदेह हो, तो किसी भी होने वाले मिशनरी से पूछ लें जिसने कलीसियाओं से अपने काम के लिए समर्थन मांगा हो!

कलीसिया के उद्देश्य के लिए बाइबल का दृष्टिकोण दें

दूसरा, किसी मण्डली के लिए कलीसिया के उद्देश्य को बाइबल के दृष्टिकोण से दिखाना आवश्यक है। कलीसिया है ज़्या?

कलीसिया का मुज़्य उद्देश्य अपने सदस्यों को आत्मसंतुष्टि देना नहीं है। हमारे युग का विषय ''मैं – वाद है'' जिसमें दूसरों के प्रति बहुत कम दिलचस्पी दिखाई जाती है, लगता है जैसे सब कुछ ''मेरे'' लिए ही हो। संसार के लोग आत्मपूर्ति अर्थात भौतिकवाद में सबसे अधिक दिलचस्पी दिखाते हैं, वे अपनी हर इच्छा की पूर्ति की मांग करते हैं और तुरन्त आनन्द पाने पर ज़ोर देते हैं।

इस आत्मकेन्द्रित युग के बारे में कलीसिया ज़्या कहती है? ज़्या कलीसिया के पास स्वार्थ की बुराई के विरुद्ध और अपना इन्कार करने के गुण की प्रशंसा में बाइबल का कोई संदेश है? सुसमाचार की आज्ञा मानने के लाभों से इसे सिखाने वालों की आवश्यकताओं से जोड़ना उचित तो है किन्तु यह खतरा भी है कि यदि अगुवे सतर्क नहीं होते तो वे जाने अनजाने में मसीह के चेलों को यह सिखा सकते हैं कि वे कलीसिया में सेवा करने के लिए नहीं बल्कि सेवा कराने आए हैं (मज़ी 20:28)। कलीसिया के सदस्यों द्वारा ''पुरानी बदसूरत क्रूस'' को छोड़ गद्दियों वाले बैंचों पर आने पर कलीसिया के अगुवे दुखी होते हैं, पर उन्हें हैरान ज़्यों होना चाहिए? अगुओं को चाहिए कि वे नये मसीहियों को अपना बलिदान करने वाली सेवा और आज्ञा को मानने की चुनौतियां दें। उन्हें ऐसे माता – पिता बनने से बचना चाहिए जो ''बच्चों'' का रोना सुनकर उनकी हर ज़िद पूरी करते हैं और बाद में उनके भोगविलासी होने पर हैरान होते हैं। जॉन एफ़. कैनेडी के शज़्दों की व्याज़्या करें, तो मसीही लोगों को चाहिए कि वे ''यह कहने के बजाय कि कलीसिया हमारे लिए ज़्या करती है, यह कहना सीखें कि हम कलीसिया के लिए ज़्या कर सकते हैं।''

कलीसिया को सदस्यों की आत्मपूर्ति की जगह के रूप में देखने के बजाय, अगुओं को सिखाना आरज़्भ करना चाहिए कि मिशन कार्य कलीसिया का सबसे पहला कार्य है। हम बाइबल के दृष्टिकोण से कह सकते हैं कि कलीसिया का काम चार प्रकार का होना चाहिए चाहिए: सुसमाचार का प्रचार, सुधार, परोपकार, और आराधना। यह पूछे जाने पर कि ''कलीसिया का काम ज़्या होना चाहिए?'' इन चारों में से सुसमाचार के प्रचार पर सबसे अधिक ज़ोर दिए जाने की आवश्यकता है। ज़्यों?

(1) *मसीह की देह होने के कारण, कलीसिया को वही करने की इच्छा करनी चाहिए जो काम मसीह ने कहा कि वह करने के लिए आया, अर्थात खोए हुओं को ढूंढ़ना और उनका उद्धार करना (लूका 19:10)।*

(2) *सुसमाचार का प्रचार सबसे पहले है।* इसके बिना शिक्षा, भले काम, या आराधना में परमेश्वर की महिमा नहीं हो सकती।

(3) *सुसमाचार प्रचार का काम ऐसा है जिसे केवल कलीसिया ही कर सकती है।* दूसरे लोगों को अच्छा अहसास कराने में सहायता कर सकते हैं, और भले कार्य कर सकते हैं; परन्तु खोए हुए संसार में मसीह का उद्धार करने वाले सुसमाचार का प्रचार केवल वही लोग कर सकते हैं जो नये नियम की कलीसिया में हैं! यदि कलीसिया खोए हुओं में सुसमाचार का प्रचार करने में असफल रहती है, तो कोई दूसरा यह काम नहीं कर सकता है! इसलिए मिशन कार्य कलीसिया के अस्तित्व की परिक्रमा में नहीं अर्थात यदि उसके लिए उचित हो तो वह ऐसा कार्य करे। बल्कि मुज़्य उद्देश्य है अर्थात यह हमारे अस्तित्व का कारण है!

उद्धार के सज़्बन्ध में बाइबल की बुनियादी सच्चाइयों को फिर से दृढ़ करें

तीसरा, उद्धार के लिए बाइबल की शिक्षा और कुछ पुरानी सच्चाइयों पर नये सिरे से ज़ोर देते हुए मण्डली में दोहराया जाना आवश्यक है:

(1) अपने ही पाप के कारण हर व्यज़्ति खोया हुआ है।

(2) इस संसार में केवल मसीह के द्वारा हर कोई उद्धार पा सकता है।

(3) केवल सुसमाचार ही उद्धार के निमिज़ परमेश्वर की सामर्थ है।

(4) उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही होता है।

(5) विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार केवल तभी होता है यदि लोग सुसमाचार की आज्ञा या परमेश्वर की इच्छा को मानें।

(6) यदि ज़िज़्मेदार लोगों ने नये नियम में बताए हुए के अनुसार मसीह के सुसमाचार को नहीं माना है तो वे खोए हुए हैं।

(7) संसार में झूठे शिक्षक पाए जाते हैं। उनकी झूठी शिक्षा से किसी का उद्धार नहीं होगा, और खोए हुए रहकर भी उनके अनुयायियों को लग सकता है कि वे उद्धार पाए हुए हैं।

(8) खोए हुओं को सुसमाचार का प्रचार करने की ज़िज़्मेदारी मसीह ने अपनी कलीसिया के लोगों को दी है। यदि मसीही लोग इस कार्य को करने में असफल रहते हैं, तो खोए हुओं का उद्धार नहीं हो सकता।

(9) नये नियम में केवल एक ही कलीसिया का पता चलता है, और परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम उसकी आराधना उस कलीसिया में बाइबल में दिए गए ढंग के अनुसार करें।

(10) स्वर्ग और नरक वास्तव में हैं, और जो कुछ हम इस जीवन में करते हैं उसी से यह तय होगा कि हम या कोई अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में रहेगा या नरक में।

मुझे संदेह है कि इन तथ्यों की समझ की कमी होने के कारण ही बहुत से मामलों में कलीसिया मिशन कार्य को छोड़कर अपने सदस्यों की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भलाई

की ओर लौट गई है। उदाहरण के लिए, यदि हम यह विश्वास नहीं करते कि लोग खोए हुए हैं, कि सुसमाचार से उद्धार हो सकता है या सुसमाचार का प्रचार करने की ज़िम्मेदारी हम पर है, तो हम खोए हुओं के पास उद्धार के इस उद्देश्य को ले जाने के लिए कोई बड़ा प्रयास नहीं करेंगे। दूसरी ओर यदि हम सुसमाचार को फैलाने में और अधिक सक्रियता से काम करना चाहते हैं, तो हमारे लिए इन महान सच्चाइयों को केवल उनमें प्रचार करना ही नहीं बल्कि उन पर विश्वास करके और विश्वास से कार्य करते हुए उन्हें बार - बार दोहराना आवश्यक है!

ग्रेट कमीशन का विश्वव्यापी दृष्टिकोण रखें

चौथा, एक मण्डली के लिए ग्रेट कमीशन का अध्ययन करते हुए पूरे संसार को ध्यान में रखना आवश्यक है। यदि हम मिशन की सोच वाले व्यक्ति बनना चाहते हैं, तो हमारे लिए ग्रेट कमीशन के वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। हमें अपने नगर, राज्य और देश की सीमाओं के बाहर रहने वाले लोगों के प्रति भी सचेत होना आवश्यक है।

शायद प्रेरितों 1:8 को न समझने के कारण हमें लगता है कि जब तक हमारे अपने शहरों, राज्यों या देश में पूरी तरह से सुसमाचार का प्रचार नहीं हो जाता तब तक हमें दूसरी जगहों पर प्रचार करने की जिम्मेदारी नहीं है। बाइबल इस विचार की शिक्षा नहीं देती है। इसके विपरीत बाइबल में ऐसे बहुत से संकेत हैं कि परमेश्वर चाहता है कि सुसमाचार दूर - दूर तक पहुंचाया जाए। अब्राहम के वंश के द्वारा, सब जातियों को आशीष मिलनी थी (उत्पत्ति 12:3)। यह भविष्यवाणी की गई थी कि मसीहा का राज्य एक ऐसी जगह होगी जहां सब जातियों के लोगों को उद्धार मिलेगा (यशायाह 2:2, 3)। यीशु ने आज्ञा दी कि हम ''सारे जगत में'' ''सब जातियों के लोगों ...'' के पास जाएं (16:15; मत्ती 28:18-20)। यीशु ने कहा कि प्रेरित ''पृथ्वी की छोर तक'' (प्रेरितों 1:8) उसके गवाह होंगे। वास्तव में, प्रेरितों के काम की पुस्तक का कुछ भाग यह दिखाने के लिए लिखा गया था कि पूरे संसार में वचन का प्रचार कैसे हुआ; इसमें सब मसीही लोगों से मसीह के लिए विश्वदर्शन रखने की चुनौती देने की इच्छा भी हो सकती है। पौलुस के जीवन काल में सुसमाचार का प्रचार ज्ञात संसार में हो चुका था (कुलुस्सियों 1:23)। स्वर्ग में इस संसार के हर भाग के लोग प्रभु की आराधना कर रहे होंगे:

> इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय - जय - कार हो (प्रकाशितवाक्य 7:9, 10)।

हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि अमेरिका में कलीसिया के सदस्य इस

पृथ्वी के 50 करोड़ लोगों का केवल कुछ प्रतिशत हैं। यदि सारे संसार में कलीसिया की सदस्यता की गणना की जाए, तो हमें पता चलेगा कि कुल मिलाकर हम संसार की जनसंज़्या का बहुत छोटा भाग हैं। इसके अलावा यदि हमने उन लोगों की संज़्या का पता लगाना हो जो संसार में किसी न किसी प्रकार अपने आपको मसीही कहलाते हैं, तो वे कुल जनसंज़्या के 30 प्रतिशत से भी कम होंगे। यह हमारा अर्थात दो सौ के लगभग देशों और विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों वाले इलाकों में फैले पचास करोड़ लोगों का खोया हुआ संसार है। अपनी चर्च बिल्डिंग के गेट से बाहर ... अपने पड़ोसियों के आगे ... अपने नगर की सीमाओं के आगे ... अपने राज्य और क्षेत्र से बाहर ... अपने देश से बाहर देखना आरज़्भ करके ही हम मसीह की तरह देख सकते हैं। तभी हमारी रुचि अपने घर से निकलकर ''वहां'' सुसमाचार ले जाने में होगी।

मिशन प्रयासों में सहायता देने के अवसर जुटाएं

पांचवां, कलीसिया के सब सदस्यों को मिशन कार्यों में निजी दिलचस्पी लेनी आवश्यक है। अगुओं द्वारा मण्डली में ऐसा वातावरण तैयार कर लेने के बाद जिसमें मिशन कार्यों में दिलचस्पी बढ़ने लगे, सदस्यों को मिशन के कार्यों में निजी तौर पर भाग लेने के अवसर दिए जाने की आवश्यकता है।

इसके लिए आवश्यक है कि मण्डलियों को मिशनों के बारे में समाचार दिए जाएं और मिशनरियों को लोगों के सामने लाया जाए। अगुओं को ऐसे अवसरों की तलाश में रहना चाहिए जिनमें वे मिशनरियों को अपने मिशन कार्य के बारे में दूसरों को बताने के लिए मण्डली के सामने लाया जाए।

मसीही लोगों को मिशन कार्यों में दिलचस्पी लेने और उनका ध्यान उसकी ओर करने के लिए समझाने का प्रयास करना जरूरी है। शिक्षा, प्रेरणा और समझाना: ये ऐसे माध्यम हैं जिनका इस्तेमाल अगुओं को मिशनरी कार्य में दिलचस्पी बढ़ाने के लिए करना चाहिए। पुलपिट से दिए जाने वाले संदेशों, बाइबल ज़्लास के पाठ और शृंखलाएं, उपासना, और मिशन प्रयासों के लिए और अधिक समर्थन देने वाली कलीसिया बनने के लिए तैयार की गई वर्कशॉपों में मिशन कार्यों के बारे में बताया जा सकता है और बताया जाना चाहिए।

मिशन के कार्यों में निजी तौर पर सक्रिय भाग लेने के लिए सदस्यों को अवसर दिए जाने चाहिए। कलीसिया के सदस्य मिशन कार्यों में कई तरह से योगदान दे सकते हैं। वे मिशनरियों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और उस मिशन कार्य को बढ़ाने के लिए चंदा दे सकते हैं। वे मिशनरियों को फील्ड में भेजने में सहायता करने और वापस आने पर उनका स्वागत करने के लिए एयरपोर्ट तक जा सकते हैं। वे मिशनरियों के लिए रिपोर्टर, प्रकाशक, या सज़्पर्क सूत्र बन सकते हैं। वे मिशनरियों के साथ पत्र व्यवहार कर सकते हैं, उन्हें कुछ सामान भेज सकते हैं, और विशेष अवसरों पर उन्हें याद कर सकते हैं। वे पत्राचार द्वारा दूसरे देशों में रहने वाले लोगों को सिखा सकते हैं। वे अल्प अवधि के लिए तैयार किए गए जैसे किसी कैज़्पेन (अभियान) के लिए मिशनरी प्रयासों में सहायता कर सकते हैं। मज़बूत

मसीहियों को ऐसे इलाकों में जहां कलीसिया कमज़ोर है अपने खर्च पर काम करके वहां की कलीसिया की सहायता करने के लिए उत्साहित किया जा सकता है। मसीही जवानों को मिशनरी विषय बनाकर शिक्षित किया जा सकता है।

यदि स्थानीय मण्डली में मिशन की सोच वाले अगुवे हैं, कलीसिया का उद्देश्य बाइबल के दृष्टिकोण वाला है, उद्धार के लिए बाइबल की शिक्षा को दोहराया जाता है, ग्रेट कमीशन का वैश्विक दृष्टिकोण है, और मिशन कार्यों में भागीदारी के लिए अवसर हैं, तो लगभग यह पज़्का है कि इसका परिणाम सदस्यों को मिशन कार्य पर ध्यान लगाने वाले बनाने के लिए तैयार करना है।

कलीसिया को प्रभावकारी मिशनरी काम में लाना

कलीकिसया के अगुओं के सामने आने वाली दूसरी चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि ज़्या काम सही हुआ है अर्थात यह अति प्रभावी ढंग से हुआ है।

यहां कई अस्वीकार करने वाली बातें आवश्यक हैं: (1) किसी भी तरह मिशन कार्य करना सराहनीय है। (2) मिशनों में अज़्सर केवल एक ही ढंग सही नहीं होता: सबसे प्रभावशाली ढंग और ''सही ढंग'' समय और स्थान के अनुसार बदलता रहता है। (3) जिन बातों की आज सिफारिश की जाती है उन्हें न मानने वाले मिशनरियों ने बहुत अच्छा काम किया है। (4) हमारे ढंग केवल परमेश्वर की आशीष से ही काम करते हैं अर्थात फल वही देता है!

जहां तक मानवीय दृष्टिकोण की बात है पिछले समय में मिशनों पर खर्च किया जाने वाला बहुत सा धन और प्रयास व्यर्थ और बेकार हुए हैं। प्रभु के धन का इस्तेमाल अच्छे ढंग से करने में दिलचस्पी लेने वाले अगुओं को ऐसे ढंगों का इस्तेमाल करने की कोशिश और ऐसे कामों का समर्थन करना चाहिए जिससे लज़्बे समय तक वह प्रभावकारी रहे।

सारांश

सभी मिशन कार्य कलीसियाओं के लिए चाहे वे छोटी हो या बड़ी, नई हो या पुरानी मिशन कार्य किसी भी देश में एक चुनौती है। किसी भी जगह की कलीसिया की शुरुआत से ही, मसीही लोगों को वहां पर प्रचार करने की जिज़्मेदारी के बारे में समझाया जाना चाहिए जहां अभी प्रचार नहीं हुआ है। अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में 1973 में मिशनों पर एक ज़्लास में वैंडल ब्रूम अज़्सर कहा करते थे, ''मिशनों का लक्ष्य कलीसियाएं बनाना है जो कलीसियाएं बनाती हैं जो कलीसियाएं बनाती हों जो कलीसियाएं बनाती हों जो कलीसियाएं बनाती हों ...।''

जब मैं ऑस्ट्रेलिया में मिशन कार्य कर रहा था, तो वहां की कलीसिया के मिशनरी भाइयों को मलेशिया में सुसमाचार का प्रचार करने में सहायता करने के लिए उत्साहित करते थे, चाहे ऑस्ट्रेलियाई कलीसिया को दूसरी कलीसियाओं से सहायता मिलती थी, इस बात में इसके प्रचारकों को बाहर के देश से सहायता मिल रही थी। ज़्यों? ज़्योंकि हमारा

विश्वास है कि नई बनी कलीसिया को यह सीखना चाहिए कि उन्हें भी ग्रेट कमीशन को मानना आवश्यक है। उन्हें अपने आपको ऐसी कलीसिया नहीं सोचना चाहिए जिसे हर समय दूसरों से सहायता मिलती रहेगी, बल्कि कलीसिया के रूप में वह ऐसा साधन बनेगी जिससे किसी दूसरी जगह सुसमाचार का प्रचार किया जा सके अर्थात केवल पाने वाली नहीं बल्कि भेजने वाली कलीसिया।

हम सबको अपने आपको ऐसे ही देखना चाहिए! कोई कलीसिया इतनी नई नहीं है और न ही कोई कलीसिया इतनी पुरानी है कि वह अपने आप से पूछे, ''यदि किसी और जगह के लोग अपने उद्धार के लिए हम पर ही निर्भर हों, तो हम उनके लिए ज़्या करेंगे ?'' वास्तव में ऐसा हो सकता है।

पाद टिप्पणी

[1]इस भाग का कुछ अंश फ्रीड-हार्डमैन लैज़्चरशिप 5 फरवरी, 1990 को ''इनवाल्विंग द रैंक - एण्ड - फाइल क्रिश्चियन इन मिशन्स'' शीर्षक से कोय रोपर द्वारा प्रस्तुत लैज़्चर से लिया गया है। बाद में यह तीन भागों में ''इनवाल्विंग ऐवरी क्रिश्चियन इन मिशन्स'' नाम से द *वर्ल्ड इवैंजलिस्ट* 19 (अगस्त 1990): 1; (सितज़्बर 1990):4; (अज़्तूबर 1990): 16 में प्रकाशित हुआ।